

संजीवनी बूटी

भारत की जड़ी बूटी–१०

संजीवनी बूटी

(विशल्यकरणी)

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

ओ३म्

भारत की प्रसिद्ध जड़ी बूटी ग्रन्थमाला—१०

रामायणकालीन

संजीवनी बूटी

वा

विशल्यकरणी

लेखक :

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

गुरुकुल झज्जर, रोहतक (हरयाणा)

प्रकाशक :

हरयाणा साहित्य संस्थान
गुरुकुल झज्जर, रोहतक
दूरभाष २०४४

प्रथम संस्करण २१००
चैत्र २०५० वि०
मार्च १९९३
मूल्य ५-००

मुद्रक :

वेदव्रत शास्त्री
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस
गोहाना मार्ग, रोहतक
दूरभाष ७२८७४

नम्र निवेदन

साधारण मनुष्य चाहे ग्राम, कस्बे, बड़े नगर वा किसी भी स्थान पर रहते हों प्रायः सभी का एक ही स्वभाव है कि वे छोटे-मोटे रोगों पर किसी वैद्य, हकीम वा डाक्टर का द्वार शीघ्र ही नहीं खटखटाते। अपने घर, खेत, जंगल, अड़ोस-पड़ोस में कोई घरेलू औषध जो भी सुगमता से मिल जाये, उसी का तुरन्त सेवन करते हैं। किन्तु प्रतिदिन दृष्टि में आनेवाले जाने-पहिचाने पीपल, नीम, बड़, आक, ढ़ाक आदि पौधों और वृक्षों का यथार्थ ज्ञान न होने से अनेक रोगों की चिकित्सा इनसे भलीभांति नहीं कर सकते। जो पीपल, नीम, संजीवनी बूटी, विशल्यकरणी, कमल, बड़, ढाक आकादि पेड़-पौधे हमारे आगे-पीछे घर और बाहर सर्वत्र उपलब्ध हैं उनसे अनेक रोगों की चिकित्सा करके व्यर्थ के कष्ट से बच सकें इसी कल्याण की भावना से भारत की प्रसिद्ध जड़ी बूटी नामक ग्रन्थमाला का १०वां पुष्प संजीवनी बूटी पाठकों की सेवा में भेंट किया जा रहा है। इसमें सामान्य रूप से रोगों का निदान, पहिचान, चिकित्सा, उपचार, पथ्यादि पर भी प्रकाश डाला है। आशा है हमारे प्रेमी पाठक इसको पढ़कर तथा इन औषधियों का यथोचित सेवन करके लाभ उठा सकेंगे। यह ग्रन्थमाला अनेक पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित होती रहेगी। आगे अपामार्ग, मयूर पक्षी, बबूल, खदिर, रोहितक, नीबू आदि पर शीघ्र ही लिखकर पाठकों को भेंट करेंगे।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
गुरुकुल झज्जर

दो शब्द

परमपिता परमात्मा की सृष्टि में असंख्य वृक्ष अथवा जड़ी बूटियां हैं, जो उसने दया करके प्राणिमात्र के कल्याणार्थ उत्पन्न की हैं, जिनके उत्पन्न करने के साथ-साथ अपनी परमपवित्र वेदवाणी के द्वारा उनके पवित्र ज्ञान का प्रकाश भी महर्षियों के हृदय में किया। इसलिए इस युग के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने यह उद्घोषित किया— वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का अथवा मानवमात्र का परमधर्म है। वेदों का उपवेद आयुर्वेद है, जिसके ग्रन्थों की रचना प्राणिमात्र के हितार्थ ऋषि मुनियों ने की है। वेद, उपवेद तथा आयुर्वेद के पढ़ने से तथा उसके अनुसार आचरण करने से हम सच्चे ज्ञान की प्राप्ति कर भयंकर रोगों तथा दुःखों से बच सकते हैं। अल्पज्ञ होने से मानव रोगी पड़ता है और अनेक दुःख भोगता है। आश्चर्य है इसके चारों ओर रोग की औषध होते हुये भी अपनी मूर्खता के कारण यह रोगों में फंसकर दुःख भोगता है।

पानी में मीन प्यासी, मुझे देखत आवे हांसी। इस लोकोक्ति के अनुसार मानव की दुर्गति हो रही है। इस दुर्दशा और दुःख से बचाने के लिये यह संजीवनी बूटी नामक पुस्तक लिख रहा हूं। किन्तु इस बूटी का ज्ञान यथार्थ रूप में वैद्यों को भी नहीं है, यह रामायण की वह प्रसिद्ध बूटी है जिसको वीर हनुमान वैद्य सुषेण और जामवन्त के परामर्श देने पर बहुत दूर पर्वतों के शिखर पर से लाया था क्योंकि इन्द्रजीत (मेघनाथ) की शक्ति लगने से यतिवर लक्ष्मण मूर्छित होगया था और जिसके बचने की भी

आशा नहीं थी। मर्यादापुरुषोत्तम राम भी देखकर अत्यन्त व्याकुल होगये थे।

आज तक विद्वान् वैद्य भी यह निश्चय नहीं कर पाये हैं कि संजीवनी वा मृतसंजीवनी, विशल्यकरणी, सन्धानी और सावर्ण्य-करणी ये चार बूटियां थीं अथवा ये गुण एक वा दो बूटियों में थे। रामायण में श्लोक इस प्रकार है—

विशल्यकरणीं नाम्ना सावर्ण्यकरणीं तथा।
संजीवकरणीं वीर सन्धानीं च महौषधीम्॥

वाल्मीकि रामायण—युद्धकाण्ड ४७/२६

यही श्लोक शब्दकल्पद्रुम कोश में भी है। रामायण के अनेक संस्करणों में यह श्लोक पाठभेद से ७४.३३ पर मिलता है।

अर्थ—हे हनुमान्! तुम पर्वत पर जाकर विशल्यकरणी= घाव को भरनेवाली, सावर्ण्यकरणी=पहले जैसा रूपरंग कर देने वाली, संजीवकरणी=जीवन को वापिस लानेवाली और सन्धानी=टूटी हड्डियों को जोड़नेवाली इन औषधियों को तुरन्त यहां लाओ।

इस विषय में अब तक कोई विशेष खोज नहीं हुई है, कभी-कभी कोई विद्वान् लेखों में इनकी चर्चा कर देता है। बहुत वर्ष हुए विशल्यकरणी पर किसी विद्वान् का एक लेख वैद्यनाथ फार्मेसी की मासिक पत्रिका में निकला था। इस बूटी को हम खोज और अनुभव के आधार पर संजीवनी बूटी कहते हैं। कुछ निघण्टुओं ने 'कलिकारी' जिसे आजकल कलिहारी कहते हैं उसी को विशल्या, लाङ्गली आदि नाम से लिखा है। इसी प्रकार वनौषधि चन्द्रोदय पुस्तक के पहले भाग में आयापान नाम से लिखा है यह इसका बंगाली नाम है किन्तु संस्कृत में इसी का नाम विशल्यकरणी है इन्हीं गुणों वाली कुछ अन्य औषधियां भी हैं, जिनमें इसी प्रकार

के गुण हैं—जैसे भृङ्गराज, सम्भालू, कण्टकारी, स्वर्णक्षीरी, गुडूची, जाति (चमेली), ज्योतिष्मती आदि। इनमें से कई का नाम विशल्यकरणी है। इसलिये इन पर पर्याप्त खोज करने की आवश्यकता है। हमने इसी विषय में जो खोज की है और चिकित्सा के द्वारा रोगों को दूर करने के लिये अनुभव किए हैं, उन्हें इस पुस्तक में आगे विस्तार से लिखा जायेगा।

अभी ३ नवम्बर १९६२ को मैं गुरुकुल झज्जर में छत पर औषध निर्माण कर रहा था कि अचानक पैर फिसल गया और खाली बोतलों पर गिर गया। गिरते ही शीशी टूट गई और कांच ने पैर में कई स्थानों पर घाव कर दिये। मैंने तुरन्त संजीवनी तैल लगाया, लगाते ही बहता हुआ रक्त बन्द होगया और पीड़ा शान्त होगई। इस प्रकार मेरे स्वयं के बहुत से अनुभव इस पुस्तक में दिये गये हैं।

इस पुस्तक के लिखने में ब्र० नन्दकिशोर जो नेपाल ने पर्याप्त सहयोग दिया है, इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

—स्वामी ओमानन्द सरस्वती

विषय सूची

—०—

ओ३म्

मृतसंजीवनी वा संजीवनी बूटी

आर्यावर्त देश की प्राचीनतम दिव्य बूटी है। लाखों वर्ष हुये तब राम और रावण के मध्य लंका में भयंकर युद्ध हुआ था। उस समय दुरात्मा रावण के शक्ति प्रहार से शूरवीर लक्ष्मण युद्ध में मूर्च्छित होकर गिर गया। वह रुधिर से लथपथ था, उस समय घबराकर शोकान्वित होकर मर्यादापुरुषोत्तम राम बोले :—

> अयं स समरश्लाघी भ्राता मे शुभलक्षणः।
> यदि पञ्चत्वमापन्नः प्राणैर्मे किं सुखेन च॥
>
> युद्धकाण्डे १०२ सर्ग, ५ श्लोक

यदि शुभ लक्षणों से युक्त यह मेरा समरश्लाघी भाई कहीं मर गया तो फिर सुखभोगने से मुझे लाभ ही क्या है ॥५॥

> लज्जतीव हि मे वीर्यं भ्रश्यतीव कराद्धनुः।
> सायका व्यवसीदन्ति दृष्टिर्बाष्पवशं गता ॥६॥

इनकी यह दशा देख मुझे अपने बल-पराक्रम पर लज्जा आती है। हाथ से धनुष छूटा पड़ता है। बाण ढीले पड़ गये हैं और आंखों में बराबर आंसुओं के उमड़ने से मुझे कुछ दिखाई नहीं पड़ता ॥६॥

> अवसीदन्ति गात्राणि स्वप्नयाने नृणामिव।
> चिन्ता मे वर्धते तीव्रा मुमूर्षा चोपजायते॥
> भ्रातरं निहतं दृष्ट्वा रावणेन दुरात्मना ॥७॥

दुरात्मा रावण द्वारा भाई को मारा देख, स्वप्न में गमन करनेवाले मनुष्य की तरह मेरे पैर आगे न पड़कर पीछे को पड़ते हैं। मेरी चिन्ता उग्ररूप धारण कर उत्तरोत्तर बढ़ती ही चली

जाती है और जी चाहता है कि इस लोक ही को त्याग दूं (अर्थात् मर जाऊं) ॥७॥

विनिष्टनन्तं दुःखार्तं मर्मण्यभिहतं भृशम् ॥८॥
राघवो भ्रातरं दृष्ट्वा प्रियं प्राणं बहिश्चरम् ।
दुःखेन महताविष्टो ध्यानशोकपरायणः ॥६॥

मर्मस्थल के अत्यन्त विदीर्ण हो जाने के कारण पीड़ित हो बुरी तरह कराहते हुए प्यारे और बाहिर घूमनेवाले अपने दूसरे प्राण की तरह भाई को देख, श्रीरामचन्द्र जो अत्यन्त दुःखी हो चिन्तित होगये और शोक से व्याकुल हुए ॥६॥

परं विषादनापन्नो विललापाकुलेन्द्रियः ।
न हि युद्धेन मे कार्यं नैव प्राणैर्न सीतया ॥१०॥

श्री रामचन्द्र जी अत्यन्त दुःखी और विकल हो विलाप करने लगे । वे कहने लगे—मुझे न तो अब युद्ध ही से कुछ काम है और न सीता ही से और न मुझे अधिक जीवे ही का कुछ प्रयोजन है ॥१०॥

भ्रातरं निहतं दृष्ट्वा लक्ष्मणं रणपांसुषु ।
किं मे राज्येन किं प्राणैर्युद्धे कार्यं न विद्यते ॥११॥

मरे हुए लक्ष्मण को समरभूमि में धूल में पड़ा देख, मैं अब अयोध्या का राज्य लेकर और जीकर ही क्या करूंगा ? मुझे अब रावण से लड़ने की भी कुछ आवश्यकता नहीं है ॥११॥

यत्रायं निहतः शेते रणमूर्धनि लक्ष्मणः ।
देशे-देशे कलत्राणि देशे-देशे च बान्धवाः ॥
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः ॥१३॥
इत्येवं विलपन्तं तं शोकविह्वलितेन्द्रियम् ॥२१॥

क्योंकि, लक्ष्मण तो समरक्षेत्र में अब सदा के लिये सो ही गये हैं । देखो ! स्त्रियां और भाईबन्धु तो सब जगह मिल सकते हैं परन्तु मुझे ऐसी कोई जगह नहीं देख पड़ती; जहां सहोदर भाई मिल सके । इस प्रकार विलाप करते हुए श्री रामचन्द्र शोक से विह्वल हो घबरा गये ॥१३॥

कथं वक्ष्याम्यहं त्वम्बां सुमित्रां पुत्रवत्सलाम् ।
उपालम्भं न सक्ष्यामि सोढुं दत्तं सुमित्रया ॥१४॥
किन्नु वक्ष्यामि कौसल्यां किन्नु वक्ष्यामि कैकयीम् ।
भरतं किं नु वक्ष्यामि शत्रुघ्नं च महाबलम् ॥१५॥
सह तेन वनं यातो विना तेनागतः कथम् ।
इहैव मरणं श्रेयो न तु बन्धुविगर्हणम् ॥१६॥
किं मया दुष्कृतं कर्म कृतमन्यत्र जन्मनि ।
येन मे धार्मिको भ्राता निहतश्चाग्रतो मम ॥१७॥

भला मैं पुत्रवत्सल सुमित्रा से जाकर क्या कहूंगा और उनके दिए हुए उपालम्भ को कैसे सहारूंगा, मताा कौसल्या तथा कैकेयो को क्या कहूंगा, जब वह कहेंगे कि लक्ष्मण के साथ वन को गया हुआ उसके बिना कैसे आया, अतएव यहां ही मरना श्रेष्ठ है पर बन्धुओं से निन्दा कराना अच्छा नहीं । मैंने अन्य जन्म में क्या दुष्कृत कर्म किया है जिससे मेरा धार्मिक भाई मेरे आगे मरा पड़ा है ।

हा भ्रातर्मनुजश्रेष्ठ शूराणां प्रवर प्रभो ।
एकाकी किं नु मां त्यक्त्वा परलोकाय गच्छसि ॥१८॥
विलपन्तं च मां भ्रातः किमर्थं नावभाषसे ।
उत्तिष्ठ पश्य किं शेषे दीनं मां पश्य चक्षुषा ॥१६॥
शोकार्तस्य प्रमत्तस्य पर्वतेषु वनेषु च ।
विषण्णस्य महाबाहो समाश्वासयिता मम ॥२०॥

हा भ्रातः ! हा मनुष्यश्रेष्ठ !! हा शूरों में श्रेष्ठ !! तू मुझे छोड़कर अकेला कैसे परलोक को जाता है, मुझ भाई को विलाप करता देखकर क्यों नहीं बोलता, तू उठ, क्यों लेट रहा है, तनिक आंख खोलकर मुझ दीन को देख, हे महाबाहो ! पर्वत तथा वनों में शोक से पीड़ित, प्रमत्त और उदास हुए मुझ को तू आश्वासन देता रहा है ॥

राममेवं ब्रुवाणं तुं शोकव्याकुलितेन्द्रियम् ।
आश्वासयन्नुवाचेदं सुषेणः परमं वचः ॥१८
त्येजमां नरशार्दूल बुद्धिं वैक्लव्यकारिणीम् ।
नैव पञ्चत्वमापन्नो लक्ष्मणो लक्ष्मिवर्धनः ॥२१॥
न ह्यस्य विकृतं वक्त्रं न च श्यामत्वमागतम्
सप्रभं च प्रसन्नं च मुखमस्य निरीक्ष्यताम् ॥२२॥

शोक से व्याकुल इन्द्रियोंवाले राम को उक्त प्रकार विलाप करते हुए को सुषेण आश्वासन देता हुआ यह उत्तम वाक्य बोला कि हे नरशार्दूल ! व्याकुलतारूप इस बुद्धि को त्याग, लक्ष्मी को बढ़ानेवाला लक्ष्मण मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ है, इसका न मुख विकृत हुआ है और न श्याम है, आप इसका उत्तम क्रान्तिवाला प्रसन्न मुख देखें ॥

पद्मरक्ततलौ हस्तौ सुप्रसन्ने च लोचने ।
एवं न विद्यते रूपं गतासूनां विशांपते ॥२४॥
विषादं मा कृथा वीर सप्राणोयमरिंदमः ।
आख्याति तु प्रसुप्तस्य स्रस्तगात्रस्य भूतले ॥२६॥
सोच्छ्वासं हृदयं वीर कम्पमानं मुहुर्मुहुः ॥२७॥
एवमुक्त्वा महाप्राज्ञः सुषेणो राघवं वचः ।
समीपस्थमुवाचेदं हनुमन्तमभित्वरन् ॥२८॥

इसके हस्ततल पद्मपत्रतुल्य रक्त और नेत्र बड़े निर्मल हैं, हे प्रजाओं के स्वामी ! मरे हुए का रूप ऐसा दृष्टिगत नहीं होता, हे वीर ! आप विषाद को प्राप्त न हों, लक्ष्मण अभी जीवित है, क्योंकि शिथिल अङ्ग किये पृथिवी पर सो रहा है, अर्थात् इसके अङ्ग अकड़े नहीं हैं, और हे वीर ! इसका हृदय बार-बार कांपता हुआ श्वास सहित है। महाप्राज्ञ सुषेण राम से उक्त प्रकार कहकर समीप स्थित हनुमान से बोला कि—

सौम्य शीघ्रमितो गत्वा शैलमोषधिपर्वतम् ।
दक्षिणे शिखरे तस्य जातामोषधिमानय ॥२९॥
विशल्यकरणीं नाम्ना सावर्ण्यकरणीं तथा ।
सञ्जीवकरणीं वीर संधानीं च महौषधीम् ॥३०॥
इत्येवमुक्तो हनुमान् गत्वा चौषधिपर्वतम् ।
चिन्तामभ्यगमच्छ्रीमानजानंस्ता महौषधीः ॥३२॥

हे सौम्य ! तुम यहां से शीघ्र ही ओषधि पर्वत को जाओ और उसके दक्षिण शिखर पर उत्पन्न हुई विशल्यकरणी=घाव को भरने वाली, सावर्ण्यकरणी=पहिले जैसा रूप रंग कर देनेवाली, सञ्जीवकरणी=जीवन को वापिस लानेवाली और सन्धानी=टूटी हड्डियों को जोड़नेवाली, इन ओषधियों को तुरन्त ही यहां लाओ, इस प्रकार कहा हुआ श्रीमान् हनुमान् ओषध पवत पर जाकर उन ओषधियों को न जानता हुआ सोच में पड़ गया ।

वीर हनुमान् ने पर्वत की शिखर पर जब वैद्य सुषेण द्वारा बतायी हुई अनेक जड़ी बूटियों को देखा और उनको निश्चय रूप से नहीं जान सका तब उस पराक्रमी वीर ने यह निश्चय किया कि मैं इस पर्वत शिखर को ही उठाकर ले चलूं, उसने तीन चार बार पर्वत शिखर को दोनों हांथों से तोला और उठाकर बड़े वेग से

चला और, सुषेण वैद्य के पास लंका में पहुंच गया, क्योंकि उसके मन में यह दृढ़ धारणा थी कि—

अगृह्य यदि गच्छामि विशल्यकरणीमहम् ।
कालात्ययेन दोष: स्याद्वैक्लव्यं च महद्भवेत् ॥३५॥

यदि विशल्यकरणी को बिना लिये मैं चला जाता हूं, काल के अधिक बीत जाने से बड़ा दोष होगा, उन सबको बड़ी घबराहट होगी।

ततः सं क्षोदयित्वा तामोषधिं वानरोत्तमः ।
लक्ष्मणस्य ददौ नस्तः सुषेणः सुमहाद्युतेः ॥४३॥
सशल्यस्तं समाघ्राय लक्ष्मणः परवीरहा ।
विशल्यो विरुजः शीघ्रमुदतिष्ठन्महीतलात् ॥४४॥
तमुत्थितं ते हरयो भूतलात्प्रेक्ष्य लक्ष्मणम् ।
साधु साध्विति सुप्रीताः सुषेणं प्रत्यपूजयन् ॥४५॥
एह्येहीत्यब्रवीद्रामो लक्ष्मणं परवीरहा ।
सस्वजे स्नेहगाढं च वाष्पपर्याकुलेक्षणः ॥४६॥

तदनन्तर उस ओषधि को पीसकर सुषेण ने महातेजस्वी लक्ष्मण को नसवार दी, तब शत्रु के वीरों का हनन करनेवाला लक्ष्मण उसके संूघने से शल्य तथा पीड़ा रहित होकर भूमितल से शीघ्र ही उठ खड़ा हुआ, भूमि पर से उठे लक्ष्मण को देखकर सब वानरों ने अति प्रसन्न हो साधु साधु कहकर सुषेण का आदर किया और शत्रु के वीरों का हनन करनेवाले राम ने "यहां आ" यह कहकर लक्ष्मण को गले लगाया, तब उनके नेत्रों से आंसुओं की धारा बहने लगी ॥

अब्रवीच्च परिष्वज्य सौमित्रं राघवस्तदा ।
दिष्ट्या त्वां वीर पश्यामि मरणात्पुनरागतम् ॥४७॥

नहि मे जीवितेनार्थः सीतया च जयेन वा ।
को हि मे जीवितेनार्थस्त्वयि पञ्चत्वमागते ॥४८॥

फिर लक्ष्मण का आलिङ्गन करके राम उससे बोले कि हे वीर ! मैं बड़ा भाग्यवान् हूं जो तुझे मृत्यु से पुनः आया देखता हूं, मुझे जीवन, सीता अथवा विजय से क्या प्रयोजन, यदि तू मृत्यु को प्राप्त हो जाता तो मुझे जीने से क्या अर्थात् तेरे मरने पर मैं कदापि जीवित न रहता।

लक्ष्मण ने स्वस्थ होते ही मर्यादापुरुषोत्तम राम को उनकी यह प्रतिज्ञा याद दिलायी कि आप निराशा को छोड़ें और रावण का वध करने की प्रतिज्ञा को पूरा करें, क्योंकि सत्यवादी अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं।

इस प्राचीन दिव्य बूटी संजीवनी विशल्यकरणी, सावर्ण्यकरणी, सन्धानी के विषय में विस्तार से जो हमने खोज की है और अनुभव किया है, पाठकों और जनता के लाभ हेतु विस्तार से वर्णन करते हैं।

संजीवनी बूटी की खोज

१९३९ ई० के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के पश्चात् मैं प्राचारार्थ महाराष्ट्र में गया, वहां जालना और सिकन्दराबाद आदि नगरों में अंग्रेजी राज्य में हमारी फौज की छावनी थी। उन छावनियों में हरयाणा के आर्यसमाजी फौजी अफसर और सैनिक थे। मैं उनके पास कल्याण, जालना और सिकन्दराबाद की छावनी में गया था। तब सुबेदार धीरजसिंह जी महीपालपुर (दिल्ली) निवासी और कप्तान अभयराम जी ग्राम सुनारिया (रोहतक) जालना (महाराष्ट्र) की छावनी में थे। कल्याण की छावनी में दफेदार रिसालसिंह बेरी रोहतक के पास होता हुआ

मैं जालना गया था। वहां कुछ दिन ठहरकर हैदराबाद आर्यसमाज के उत्सव पर चला गया। सूबेदार धीरजसिंह जी मेरे साथ गये थे। हैदराबाद उत्सव में दो-तीन दिन ठहरे, वहां से सेना में प्रचार करने के लिये प्रचुर मात्रा में आर्यसाहित्य खरीदा। उस उत्सव पर भाई बंशीलाल, पण्डित नरेन्द्र जी, पण्डित विनायक राव जो और पण्डित मनोहर जी आदि विद्वानों से मिलना-जुलना हुआ, उनके व्याख्यान आदि सुने। सबके साथ परिचय बढ़ा, किन्तु भाई बंशीलाल जी ने मुझसे विशेष प्रेम दिखाया और मुझे आग्रह-पूर्वक प्रचारार्थ अनेक आर्यसमाजों में ग्रामों-नगरों में अपने साथ ले गये और अनेक स्थानों पर मेरे व्याख्यान करवाये। मेरे तपस्वी जीवन के कारण उनके साथ गहरी मित्रता हो गई। क्योंकि वे स्वयं भी बड़े तपस्वी और पुरुषार्थी थे। उनके छोटे भ्राता श्याम-लाल जी निजाम हैदराबाद के अत्याचार से जेल में शहीद हो गये थे। मेरठ आर्य महासम्मेलन में पण्डित विनायकराव विद्यालंकार में कहा था कि भाई बंशीलाल और भाई श्यामलाल दोनों भाइयों की राम लक्ष्मण की जोड़ी थी। उन दोनों त्यागी-तपस्वी भाइयों ने ही हैदराबाद स्टेट में आर्यसमाज का प्रचार करके घर-घर में वैदिक धर्म की ज्योति जलाई। इस सच्चाई को मैंने एक मास भाई बंशीलाल जी के साथ रहकर अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखा कि इन दोनों तपस्वी भाइयों ने नगर-ग्राम तक ही नहीं आर्य-समाज को जंगल में बनी हुई झोपड़ियों तक पहुंचा दिया।

मैं एक दिन उनके साथ प्राचारार्थ ग्राम में जा रहा था, रात्रि अन्धेरी थी। मैं नंगे पैर रहता था। मार्ग में एक कांटेदार तार ने मेरे पैर को फाड़कर जख्मी कर दिया। खून बहने लगा और बड़ी पीड़ा हुई। मैंने भाई जी को कहा क्या आपकी पिटारी में कोई ओषधि है? झट उन्होंने अपनी बैटरी निकाली और उसे

जलाकर एक खेत से बूटी उखाड़कर लाये और उसका रस निचोड़कर मेरी चोट (जख्म) पर टपकाया। उस बूटी का रस पड़ने से खून बन्द हो गया और पीड़ा भी शान्त हो गयी, और रात-रात में ही चोट आदि सब ठीक हो गये। मैंने दिन में भाई जी से पूछा कि वह बूटी मुझे दिखाओ जिसका रात्रि में मेरी चोट पर रस लगाया था। वह कोई दिव्य बूटी है। भाई जी देवतास्वरूप थे, वे उसी समय बूटी उखाड़ लाये और मेरे हाथ में दे दी। मैंने भाई जी से उसका नाम पूछा तो उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र में इसे घावकारी (घाव की बूटी) और वानरपूंछी भी कहते हैं। वे इसके और अधिक गुण नहीं बता सके।

तत्पश्चात् मैंने इसकी खोज शुरू की और चिकित्सा में इसका खूब प्रयोग किया। मैं भारत के जिस-जिस प्रान्त में गया तथा विदेशों में गया, इसको सब जगह ढूंढ़ने का प्रयत्न किया। भारत वर्ष में तो यह आजकल सभी प्रान्तों में मिलती है, किन्तु विदेश में यह अफ्रीका में खूब देखने को मिली। मैं कालापानी, अण्डमान-निकोबार में गया, वहां के पहाड़ी जंगलों में यह बूटी प्रचुर मात्रा में होती है। दिल्ली से लेकर जो पर्वतमाला सारे राजस्थान तक फैली हुई है जिसे अरावली पर्वत (आड़ेवाला) कहते हैं, उन सभी पर्वतमालाओं में यह बूटी पर्याप्त मात्रा में होती है। पहाड़ों में जो मजदूर लोग पत्थर तोड़ने का कार्य करते हैं, वे प्रायः सभी जानते हैं कि यह बूटी चोट और घावों को ठीक करनेवाली है। प्रायः वे सब इसका प्रयोग भी करते हैं। किन्तु इसके विशेष गुणों और यहां तक इसके नाम तक को भी नहीं जानते हैं। मैं लगभग पैंतालीस वर्ष से इसको जानता और इसका चिकित्सा में खूब प्रयोग करता हूं। जब महाराष्ट्र में मैंने इसको पहले दिन देखा और इसका प्रयोग किया तो उसी समय मेरा दृढ़ निश्चय हो

गया था कि यह सामान्य औषधि नहीं है। यह दिव्य औषधि है। हो सकता है रामायण काल के समय पर्वत शिखरों पर होती होगी, किन्तु आज तो यह भारत में सर्वत्र पाई जाती है। जब मैंने देखा कि यह बूटी वर्षा ऋतु के पश्चात् खूब फलती-फूलती है और यह वर्षजीवी ही है और अपने बीज सर्वत्र वायु द्वारा फैलाकर चली जाती है। सदैव उपलब्ध नहीं होती है, जहां इसे जल मिलता है वहां उत्पन्न होती और फलती-फूलती है और फिर अपना जीवन समाप्त होने पर इसका अभाव हो जाता है तब इसका सदैव उपयोग कैसे किया जाये। कई वर्ष तक विचार कर संजीवनी तैल बनाया जो समय पड़ने पर काम आता रहता है। तत्काल आवश्यकता पड़ने पर इस बूटी की खोज नहीं करनी पड़ती। यह तैल आवश्यकता की पूरी पूर्ति करता रहता है। इस बूटी और तैल का प्रयोग लगभग ४५ वर्ष से करता आ रहा हूं। मेरे जनेक मित्रों ने भी इसका खूब प्रयोग किया है। यह दिव्य गुणों से भरपूर है। हमारे पूर्वज क्षत्रिय योद्धा राष्ट्ररक्षार्थ युद्धों में बुरी तरह जख्मी हो जाते थे और ऐसी औषधियों से रात-रात में ही ठीक होकर अगले दिन अपने शत्रुओं से युद्धक्षेत्र में लड़ने के लिये चले जाते थे। हमें रामायण से ही इसका सच्चा और पक्का प्रमाण मिलता है। लक्ष्मण को मूर्च्छित पड़ा देखकर राम आदि यह समझ बैठे कि लक्ष्मण मर गया है जीवित नहीं है और दुःखी होकर विलाप कर रहे थे किन्तु उस समय का अनुभवी वैद्य और आयुर्वेद का पण्डित सुषेण लक्ष्मण को अच्छी तरह देखभाल कर शान्त और उत्साहित कर रहा था और जाम्बवन्त जो अत्यन्त अनुभवी वृद्ध जड़ी बूटियों का ज्ञाता था, उसके परामर्श से सुषेण वैद्य ने हनुमान् के द्वारा यह दिव्य बूटी मंगवाई। उसका रस लक्ष्मण को नाक द्वारा सुंघाया और पिलाकर तथा अन्य उपयोग करके लक्ष्मण यति को तुरन्त खड़ा कर दिया और खड़ा होते ही

उसने अपने पूज्य भ्राता राम को क्षत्रिय उचित प्रतिज्ञा याद दिलायी कि आप रावण को मारकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें।

इन बूटियों की चर्चा रामायण में कई स्थानों पर आई है और इनके प्रयोग से अनेक योद्धा और सैनिकों की चिकित्सा की गई थी। इन बूटियों के नाम पढ़ने से यह प्रतीत होता है कि ये चार बूटियां पृथक्-पृथक् थीं। इनके नाम—मृतसंजीवनी, संजीवनी, संजीवकरणी, विशल्यकरणी, सावर्ण्यकरणी और संधानी सवर्णकरणी, सन्धानकरणी, सुवर्णकरणी, सौवर्णकरणी, स्ववर्णकरणी, सर्ववर्णकरी इत्यादि नाम पाठभेद से वाल्मीकीय रामायण के अनेक संस्करणों में मिलते हैं। इन पाठभेदों के देखने से यह लगता है कि ये चार बूटियां पृथक्-पृथक् हैं। किन्तु कहीं ऐसा प्रतीत होता है कि विशल्यकरणी और संजीवनी भेद से दो बूटियां हैं, और एक श्लोक से यह प्रतीति होती है कि इस बूटी का नाम विशल्यकरणी है क्योंकि शरीर में कोई अस्त्र-शस्त्र या उसका विष रह गया हो तो यह बूटी शल्यक्रिया के बिना अर्थात् चीर-फाड़ के बिना शरीर में रहे हथियार, उसके भाग और विष को शरीर से बाहर निकाल देती है।

वाल्मीकीय रामायण से यही प्रतीत होता है कि सुषेण वैद्य ने विशल्यकरणी का रस निकालकर वीर लक्ष्मण को सुंघाया तथा नाक में डाला और नस्य दिया, उसी से लक्ष्मण होश में आया, उसकी पीड़ा आदि दूर हुई और स्वस्थ होकर खड़ा हो गया। रामायण काल में इन बूटियों के क्या-क्या प्रयोग होते थे उनका हमें ज्ञान नहीं, किन्तु अपने इस स्वल्प जीवन में इन बूटियों से वा बूटी से जनता जनार्दन की जो सेवा हमने की है, वह संक्षेप से आप की सेवा में निवेदन करता हूं।

भाई वंशीलाल की कृपा से तो इस बूटी का ज्ञान हुआ तथा इतना अनुभव हुआ कि चोट लगने पर, कट जाये, लहू

बहता हो, पीड़ा होती हो तो इसका रस डालने से रक्त बहना बन्द हो जाता है, और जख्म को यह बहुत शीघ्र अच्छा करती है। १९६५ ई० में जिस समय पाकिस्तान के साथ हमारा युद्ध हो रहा था उस समय झज्जर में तहसीलदार सरदार बलवीरसिंह थे, युद्ध में सहायता के लिये सब सरकारी अधिकारी चन्दा इकट्ठा कर रहे थे, वह तहसीलदार भी गुरुकुल में मेरे पास आया और उसने कहा कि यदि आप एक सौ एक रुपया दे दें तो बहुत से आदमी एक सौ रुपया आपकी देखा-देखी में दे देंगे। मैंने तुरन्त एक सौ रुपया दे दिया और ५०० रुपये का संजीवनी तैल भेंट कर दिया और कहा कि लड़ाई के मैदान में अपनी सेना के पास भिजवा देवें जिससे जख्मी सैनिकों की मरहम पट्टी हो सके और उन्हें कह दिया कि और आवश्यकता हो तो मेरे पास से मंगवाकर भेज देवें। उसके पश्चात् उसने मुझे सूचना नहीं दी।

गोरक्षा आन्दोलन

जब भारत की प्रधान मन्त्री इन्दिरा जी थी तो गोहत्या बन्द कराने के लिए सभी गोप्रेमियों ने मिलकर गोरक्षार्थ बहुत बड़ा आन्दोलन किया था। उसमें बहुत लोगों ने जेलें काटी थीं, मैं तथा अन्य आर्यसमाजी भी इस आन्दोलन में जेल गये। हमारे कन्या गुरुकुल नरेला की सभी ब्रह्मचारिणियां एवं आध्यापिकायें जेल में गयीं, तथा गुरुकुल झज्जर के सभी ब्रह्मचारी और कुछ आध्यापक जेल में गये। जब आन्दोलन समाप्ति पर ही था तब नवम्बर १९६६ में जेल में भयंकर लाठी चार्ज हुआ, उसमें हमारे सत्याग्रहियों को बहुत चोट आई। डाक्टर रघुवीरसिंह का हाथ टूट गया था, हमारे स्नातक रणवीर शास्त्री के पिता श्री

महाशय प्रीतसिंह आर्य पौलीवासी को तो सौ लाठियां लगी थीं, लगभग साढे तीन सौ सत्याग्रहियों को बहुत चोटें आयीं। जेल के सभी वार्ड सत्याग्रहियों के खून से रंग गये थे। मैं उस समय तीन बार जेल काटकर बाहर आगया था। मैंने उसी समय इस संजीवनी विशल्यकरणी बूटी से संजीवनी तैल बनाया और इस तैल के कई कनस्तर सत्याग्रहियों के पास दिल्ली की तिहाड़ जेल में भेज दिये, इस तैल ने जादू का काम किया, और एक सप्ताह के अन्दर सभी सत्याग्रहियों की चोटें और जख्म ठीक हो गये। जो सत्याग्रही जेल के हस्पताल में थे उनकी वहां चिकित्सा हो रही थी, बड़ी देर में अच्छे हुए। जेल में सब व्यक्ति चकित हो गये, तैल ने जादू सा काम कर दिया था।

मैं एक दिन प्रचार यात्रा से लौटा था, जब गुरुकुल झज्जर के पास आया तो हमारे एक पड़ोसी किसान ने कहा कि आप के सबसे अच्छे बैल की अनाड़ी हाली ने फाली मार दी है, ऐसी फाली मारी है कि छः महीने बैल उठ नहीं सकेगा। वह बैल उस समय बहुत ही बढ़िया बैल था, उसको खरीदने के लिए बहुत ग्राहक आते थे, किन्तु मैं अपने स्वभाव के कारण अच्छी वस्तु कभी बेचता नहीं। मुझे यह सुनकर बड़ा कष्ट हुआ कि हमारा अच्छा बैल हल की फाली लगने से बेकार हो गया। मैं सीधा गोशाला में बैल के पास गया, वह दुःखित अवस्था में बैठा था, मैंने उसको पुचकारा तो उसकी आंखों से आंसुधारा बहने लगी। मैंने उसी समय ओषधालय से संजीवनी तैल की कुछ शीशी मंगवाई। आटा, गुड़, आक जड़ की छाल और कबूतर की बींठ, कुछ हल्दी मंगवाकर संजीवनी तैल में हलुवा बनवाया और गर्म गर्म हलुवे से बैल के पैर की सिकाई की, फिर उसी हलुवे की पट्टी बांधी। कुछ देर के पीछे बैल उठ खड़ा

हुआ। अगले दिन उसी हलुवे की पट्टी बांधने पर बैल खड़ा होकर चलने लगा। तीसरे दिन पट्टी बांधने पर बैल को हल में जोत दिया, क्योंकि आषाढ़ मास था और खेती बोने के दिन थे। इस दिव्य औषधि के तैल ने जादू जैसा कार्य करके कमाल कर दिया। जिस बैल की छ: महीने में ठीक होने को आशा नहीं थी वह तीन दिन में ठीक होगया। जिस प्रकार लक्ष्मण यति पर बूटी ने विचित्र प्रभाव किया था, वही प्रभाव हमारे बैल पर कर दिखाया। इस बूटी का सबसे विशेष गुण आरम्भ से अब तक मेरे अनुभव में यह आया है कि जो जख्म और चोट अन्य औषधियों से कई मास में अच्छे होते हैं वे इस दिव्य औषधि के प्रयोग से कुछ दिनों में ही ठीक हो जाते हैं, और कुछ दिनों में ठीक होनेवाले कुछ घण्टों में ठीक हो जाते हैं। जब आरम्भ में मैंने यह गुरुकुल झज्जर संभाला तो मैं मास्टर जयसिंह आर्य के साथ राजनियम के विरुद्ध दिल्ली से कुछ अस्त्र-शस्त्र सम्बन्धी सामान ला रहा था। हम दिल्ली से रोहतक जा रहे थे। उस समय हमने पीछे एक अंग्रेज की गाड़ी आती हुई देखी। मास्टर जी को संशय हुआ कि यह अंग्रेज हमें पकड़ने के लिये गाड़ी द्वारा पीछा कर रहा है। कुछ देर तक मास्टर जी ने अपनी मोटर साइकिल तेज चलाई, किन्तु मास्टर जी को जँच गया कि यह अंग्रेज अब भी हमारा पीछा कर रहा है तो उन्होंने गाड़ी को सड़क से कच्चे में उतार दिया, गाड़ी तीस मील से अधिक गति से चल रही थी, इसलिये कच्चे में उतरते ही गाड़ी काबू से बाहर हो गयी। मैंने विचारा कि हम दोनों को ही चोट लगेगी। इसलिये मैं चलती गाड़ी से कूद गया, कूदने पर मैं गिर गया और पैर में सख्त चोट आयी, पैर का मांस फट गया। मैंने अपने हाथ से सख्ती से उसे दबाया, मुझे उस चोट के कारण कुछ क्षण के लिये मूर्च्छा भी आगई, मेरी आंखें खुली तो मास्टर जी मोटर

साइकिल सहित दूर पड़े थे। कुछ सम्भलकर उठे, उनको चोट नहीं लगी थी, वे उठकर मेरे पास आये, कपड़ा फाड़कर मेरे पैर पर भिगोकर पट्टी बांधी। फिर मोटर साइकिल पर बैठकर रोहद ग्राम तक पहुंच गये, वहां सूबेदार खजानसिंह जी आर्य सज्जन थे, उनके घर गये। उन्होंने गाय का दूध गर्म करके हल्दी डालकर पिलाया। कुछ शान्ति मिली, फिर मोटर साइकिल पर सवार होकर रोहतक पहुंच गये। वहां कर्फ्यू लगा हुआ था, इसलिये बागों में से निकलते हुए मास्टर जयसिंह के घर पहुंच गये। उन्होंने एक अच्छे डाक्टर सूरी को मरहम पट्टी हेतु बुलाया। डाक्टर भी आर्यसमाजी थे। उन्होंने प्रेम से प्रतिदिन मलहम पट्टी की किन्तु चोट का जख्म अच्छा नहीं हुआ, पक गया और ज्वर आने लगा।

मैं गुरुकुल आना चाहता था किन्तु मास्टर जी इस जिद पर थे कि आप अच्छे हो जाओ तब जाना। अन्य मिलनेवालों को पता चल गया। प्रो० शेरसिंह के बुआ के बेटे मा० दीपचन्द आर्य आये। उनके साथ बेरीवाले सूबेदार टेकचन्द जी भी थे, ये दोनों मुझे बेरी ले गये और वहां के डाक्टर से मरहम पट्टी करवाने लगे, उनकी चिकित्सा से कुछ आराम तो हुआ किन्तु जख्म पूरा अच्छा नहीं हुआ। मैं चलने फिरने में सर्वथा असमर्थ था, मुझे किसी सवारी में हस्पताल ले जाया जाता था। उन दिनों श्री अर्जुनदेव जी आर्य मेरी सेवा कर रहे थे। मैंने उनसे कहा यहां अच्छा होने में देर लगेगी मुझे गुरुकुल ले चलो, वहां अपनी चिकित्सा स्वयं करेंगे। गुरुकुल झज्जर पहुँचने पर हल्दी और गाय के घी में रूई का फोहा गर्म करके बांधा, दो-चार दिन में मैं ठीक हो गया, पुन: कार्य करने लगा। १५-२० दिन डाक्टरी चिकित्सा करवाने में मुझे बहुत कष्ट था। उन दिनों मुझे संजीवनी बूटी का ज्ञान नहीं था, ज्ञान होता तो इसका तैल

बनाकर प्रयोग करते तो यह व्यर्थ का कष्ट नहीं होता।

आज प्रातःकाल मुझे (लेखक को) भूल से शिर में सख्त चोट लगी, संजीवनी तैल मेरे पास था, चोट पर लगाया और मालिश की, कुछ देर में ऐसी अवस्था होगई कि मुझे चोट लगी ही नहीं। मैंने पूरा व्यायाम, मालिश, आसन, प्राणायाम किया और स्नान, सन्ध्या, यज्ञादि अपना सारा नित्यकर्म किया। मैं जिस समय दोपहर को बोलकर ब्रह्मचारी नन्दकिशोर विद्यावाचस्पति से लिखवा रहा था, उस समय हमारी रसायनशाला के अध्यक्ष सरपंच वेदप्रकाश जी आये और मुझसे पूछने लगे कि कुछ रोगी बाहर से बुलाकर आपको दिखाने हैं आप किस दिन यहां मिल सकेंगे। मैं डायरी मंगवाकर देख ही रहा था कि वेदप्रकाश जी की दृष्टि मेरे माथे पर गई और कहने लगे आपका माथा सूज रहा है क्या भिड़, ततैये या मधुमक्खी ने काटा है। उस समय मैं अपनी चोट को सर्वथा भूले हुए था, क्योंकि उसमें पीड़ा ही नहीं थी, जिस समय चोट लगी उस समय मैंने संजीवनी तैल की खूब मालिश की और वह चोट कुछ ही समय में ठीक होगई।

संजीवनी वा विशल्यकरणी बूटी जिससे यह तैल बनता है यह हमारे भारत की प्राचीन दिव्य बूटी है, यह रामबाण के समान अचूक है।

संधानी—इसी का नाम संधानी भी हो सकता है। अथवा हड्डी के जोड़ने वाले गुण होने से विशल्यकरणी वा संजीवनी भी संधानी का काम करती है। मेरे विचार से तो एक ही बूटी के यह चार नाम हैं। सम्भव यह भी है कि चार बूटी पृथक्-पृथक् हों। जिनके अन्दर ये चारों गुण मिले-जुले पाये जाते हों। मैं एक दिन सायंकाल नहा-धोकर सन्ध्या करने के लिए बैठा ही था कि अकस्मात् न जाने क्यों मेरे मन में यह विचार आया कि किसी ब्रह्मचारी को चोट लगी है, मैंने इस विचार को टालने

का यत्न किया किन्तु यह बार-बार आता रहा, उसने मुझे सन्ध्या नहीं करने दी। मैंने सन्ध्या बीच में ही छोड़ दी और यह जानने के लिए किसी ब्रह्मचारी को चोट लगी है, मैं बाहर आया और इधर उधर देखने लग गया, तो मुझे अपने सेवक ब्रह्मचारी विरजानन्द दिखाई दिये, मैंने उनको बुलाया देखो किसी ब्रह्मचारी को चोट लगी है। नीचे देखकर आये और बोले किसी को भी चोट नहीं लगी है। मैं फिर सन्ध्या पर बैठ गया किन्तु वही विचार किसी ब्रह्मचारी को अवश्य चोट लगी है बार-बार तंग करने लगा, फिर विरजानन्द जी को कहा अवश्य किसी को चोट लगी है वह फिर देखने गया और देखकर कहा कि किसी को चोट नहीं लगी है। फिर सन्ध्या में बैठा फिर वही विचार आया, मैंने पुनः कहा कि अच्छी तरह से देखकर आओ, चोट अवश्य किसी को लगी है। विरजानन्द जी फिर देखने को चले गये, मैं प्रतीक्षा करने लगा, थोड़ी देर में हमारे गुरुकुल का ट्रैक्टर भट्ठे पर से ईंटें लेकर आया उसके आने पर पता चला कि एक ब्रह्मचारी विश्वदेव (गोपाल) को चोट लगी है वह चलते ट्रैक्टर में ट्राली में जल्दी आगे आने का प्रयास कर रहा था, वह गिर गया और ३००० ईंटों की भरी हुई ट्राली उसके पैर के ऊपर से निकल गई और पैर की हड्डियां टूट गई। मैंने उसी समय संजीवनी तैल मंगवाकर आक की जड़ का बक्कल, कबूतर की बींट, गुड़, आटा मिलाकर हलुआ बनवाया और ब्रह्मचारी को हल्दी और घी मिलाकर गर्म-गर्म दूध पिलवाया, उसकी पीड़ा पखेरू हो गई और वह सुखपूर्वक सो गया। जब प्रातःकाल उठा तो पुनः उसी प्रकार हलुआ पकाकर बांध दिया। उसे कष्ट कुछ भी नहीं था, वह हंस रहा था किन्तु मैंने यह उचित समझा कि कभी हड्डी गलत न जुड़ जाये इसलिये उसे हड्डी बांधनेवाले एक झूथर जानकार चिकित्सक

के पास सीदीपुर लोवा ले गये, वह टूटी हड्डी बांध देगा। उस समय का वह प्रसिद्ध चिकित्सक था। मेरे मिलनेवाला भी था। क्योंकि मैंने उसकी धर्मपत्नी की चिकित्सा भी की थी किन्तु वह बहुत ही परोपकारी व्यक्ति था। वह अपनी चिकित्सा से निष्काम सेवा करता था, उसने एक पैसा भी किसी रोगी से नहीं लिया। कुछ ही दिनों में उस बालक की हड्डी जुड़ गयी किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं रहा। मोटर साइकल जीपादि गाड़ी से मेरी लगभग एक दर्जन से अधिक दुर्घटनाएं हुई हैं। दोनों हाथों की हड्डियां टूटीं, एक पैर की हड्डी डिग गई, सिर हाथ पैरों में बहुत चोटें आयीं, लगभग एक दो चोट को छोड़कर सभी चोटें संजीवनी तैल से ही अच्छी हुई हैं।

एक बार मैं लोहारू आर्यसमाज से बाढ़पीड़ित जनता की सहायता के लिए बैठक करके लौट रहा था, उस समय हमारी गाड़ी के ब्रेक फेल हो गये या और कुछ हुआ, हमारी गाड़ी हरयाणा रोडवेज की बस से बुरी तरह टकरा गई, उसमें सबसे अधिक चोट मुझे लगी, एक हाथ की हड्डी टूट गई, पैरों में भी चोट लगी और गाड़ी का शीशा टूटने से मेरी दायीं आंख के पास शीशे ने काटकर गहरा जख्म कर दिया, आंख फूटने से बाल-बाल बच गई किन्तु जख्म गहरा और लम्बा था, कुछ ही क्षणों में जख्म द्वारा शिर का कई किलो खून निकल गया। साथियों को ज्योंही होश आया संजीवनी तैल गाड़ी में रखा था उसे निकालकर शीघ्र ही लाये और जख्म पर पट्टी बांध दी, लहू निकलना बन्द हो गया और पीड़ा भी शान्त हो गयी किन्तु हाथ की जो हड्डी टूटी थी उसे जानबूझकर कसकर नहीं बांधा क्योंकि बाँधने से कभी हड्डी गलत न जुड़ जाये यह डर था, लोहारू से कर्मपाल को बुलाया, उसने मोटर साइकिल से भाग दौड़ की और लाड ग्राम से एक हड्डी बांधनेवाले फौजी

को ले आया, उसने हड्डी की पट्टी ठीक बांध दी। रात को वहीं सड़क पर एक दुकानदार के पास रहे, फिर अगले दिन एक किराये को जीप करके रोहतक आये क्योंकि अपनी जीप तो दुर्घटना में टूट गयी थी। मेरे शिष्य डा० राजेन्द्रकुमार वैद्य कर्मवीर सहित रोहतक पहुंच गये। वहां से मुझे नरेला कन्या-गुरुकुल ले आये। मेरी आंख के पासवाले जख्म को जो कुछ गहरा और लम्बा था देखकर श्री डा० राजेन्द्रकुमार जी ने बहुत आग्रह पूर्वक कहा कि मैं इसको टांके लगाकर सी देता हूं यह शीघ्र ही अच्छा हो जावेगा। किन्तु मैंने ऐसा करने से मना कर दिया और कहा हमारे संजीवनी तैल से ही जख्म की पट्टी करने दे, दो-चार दिन में अच्छा हो जायेगा। हुआ भी ऐसा ही, जो हाथ की हड्डी टूट गई थी उसकी दोबारा पट्टी सरकारी हस्पताल दिल्ली में डाक्टरों द्वारा प्रो० शेरसिंह आदि के आग्रह पर बंधवाई। जो सर्वथा गलत बांधी और हड्डी ठीक नहीं जुड़ी, और हाथ का एक गट्टा निकला हुआ रह गया।

छः महीने तक बार-बार पलस्तर करवाया और उतरवाया किन्तु डाक्टरों की मूर्खता से हड्डी गलत जुड़ गई। पलस्तर के कारण हाथ निर्बल होगया और कष्ट देने लगा, विवश होकर एक देशी हड्डी बांधनेवाले से हड्डी तुड़वाकर दोबारा बंधवाई तो फिर कुछ आराम हुआ। लेकिन इस हाथ में सदा के लिए निर्बलता रह गई, वह शक्ति नहीं आयी, जब कभी इस हाथ में कष्ट होता है तो मैं संजीवनी तैल की मालिश करके ठीक करता हूं। इस तरह यह संजीवनी बूटी विशल्यकरणी बूटी और इससे बना हुआ तैल अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है।

नरेला ग्राम में हमारे विशेष प्रेमी श्री सुखवीर जी आर्य हैं, ये तीजों के त्यौहार पर झूला-झूल रहे थे, रस्सा टूटकर ये बहुत दूर एक सूखे लक्कड़ पर जा पड़े, बहुत भयंकर चोट लगी, छः

इन्च लम्बा, कई इन्च गहरा और चौड़ा घाव होगया, डाक्टर ने टांके लगाकर इसकी चिकित्सा की, किन्तु घाव के पकने से टांके गलकर निकल गये, रक्त और मवाद बहने लगा, भयंकर पीड़ा होने लगी, उसने अपनी इस चोट की सूचना मेरे पास कन्या गुरुकुल नरेला में भेजी। मैंने विरजानन्द जी को संजीवनी तेल देकर मरहम पट्टी करने के लिए भेजा।

नीम के पत्तों का गर्म पानी करके धोकर जख्म को साफ किया और उसमें संजीवनी तैल का फोहा अच्छी तरह भिगोकर पट्टी बांध दी, खून रुक गया, पीड़ा बन्द हो गयी और जख्म शीघ्रता से भरने लगा। डाक्टर जो इस चिकित्सा में फेल हो गया था, जख्म को देखकर पूछने लगा कि इस जख्म पर क्या औषधि लगाई जिससे यह जख्म अच्छा हो रहा है। सुखवीर जी ने डाक्टर को बता दिया कि गुरुकुल झज्जर का बनाया हुआ संजीवनी तैल स्वामी जी ने भिजवाया है उसी ने जख्म को अच्छा करके जादू का काम किया है। डाक्टर आश्चर्य में पड़ गया, और कहने लगा कि तैल से और जख्म अच्छा हो गया, फिर उसी डाक्टर ने अपने रोगियों को ठीक करने के लिये यही तैल हमारे यहां से मंगवाया। सुखवीर जी का गहरा जख्म बहुत शीघ्र अच्छा हो गया। उन्होंने यह कहा कि यह तैल जादू के समान कार्य करता है। उसने नया मकान बनवाया था, यज्ञ करवाया, हमें ११०० रुपया दक्षिणा दी।

एक दिन हम आयुर्वेद का कोई घृत बना रहे थे, कड़ाही भट्टी पर चढ़ी हुई थी, दवाई और घृत बहुत जोर से उबल रहा था, एक ब्रह्मचारी ने ठण्डे पानी की एक बाल्टी उसमें डाल दी, इससे भयंकर उफान आया और ब्रह्मचारी घृत आदि के उछलने से जल गया, वह शरीर से नंगा ही लंगोट बांधे काम कर रहा था। जलने से भयंकर पीड़ा हुई, वह शोर मचाता हुआ भागा हाय जल गया, हाय जल गया। मैंने प्रेम से उसे बैठाया और उसके सिर

पर तथा शरीर पर जहां-जहां जला था संजीवनी तैल की शीशी खोलकर तैल की धारा डालनी शुरू की, लगभग आधा घण्टे तक मैं तैल की शीशियां खोलकर उसके जले हुए जख्मों पर डालता रहा, ज्यों-ज्यों उसके शरीर पर तैल पड़ता रहा उसको शान्ति होती जाती थी और जलने की पीड़ा और जलन समाप्त हो गयी। वह भयंकर रूप से जला था। उदारतापूर्वक इस संजीवनी तैल से ब्रह्मचारी महेश का दर्द पीड़ा सब समाप्त हो गई, और उसको ऐसी शान्ति मिली कि जैसे कि जला ही नहीं था। सामान्य जख्म तो बहुत शीघ्र ही भरकर अच्छे हो गये। जलने से कुछ गहरे जख्म हुए थे, उनके भरने अच्छा होने में कुछ समय लगा, इस तैल ने जहां जख्म अच्छे किये थे वहां साथ-साथ शरीर के जले हुए स्थानों पर कोई दाग वा निशान नहीं रहने दिया। इसने सावर्ण्यकरणी वाले गुण पूरे कर दिये और चमड़े का रंग पूर्ववत् सुवर्ण बना दिया। यह बूटी ताजी मिल जाये तो इसका रस निकालकर डालने से जले हुए स्थान पर फफोले नहीं पड़ते, पीड़ा आदि शान्त हो जाते हैं, जो हमने इससे बने हुये तैल के गुण लिखे हैं वे ही बूटी के रस में हैं।

नरेला में एक बार एक व्यक्ति जो बुरी तरह जला हुआ था वह हमारे पास आया। पहले वह डाक्टरों के पास गया था। डाक्टरों ने उसे जवाब दे दिया था कि तू अच्छा नहीं हो सकता, मर जायेगा। हमने उसे सान्त्वना दी, और संजीवनी तैल की कुछ शीशियां दे दीं और प्रयोगविधि बता दी। कुछ ही समय में अच्छा होगया। हमने हमारे मित्रों और साथियों ने जले हुए रोगियों पर खूब प्रयोग किया, सब जगह इस द्वारा चिकित्सा करने में पूर्ण सफलता मिली, मेरे औषधि-निर्माण करते हुए अनेक बार हाथ-पैर जल जाते हैं इस तैल के लगाते ही तुरन्त जलन और पीड़ा शान्त हो जाती है, न फफोले पड़ते हैं न कोई पीड़ा

रहती है, यह बूटी जले हुए पर रामबाण का कार्य करती है, सबसे बड़ा गुण इस बूटी में और इसके बने हुए तैल में यह है कि जहां यह जले हुए की सर्वोत्तम ओषध है वहां यह जले हुए स्थान पर निशान और चर्म की सुकड़न नहीं रहने देती, नहीं तो जले हुए स्थान पर श्वेत कुष्ठ (फुलभरी) के सफेद दाग हो जाते हैं, जो सारी आयुभर रहते हैं, कभी नहीं मिटते। हमारे पास ऐसे रोगी भी आये हैं जो बहुत वर्ष पहले जले थे और उनके शरोर पर सफेद दाग और जख्मों के गड्ढे तथा चर्म में सुकड़न थी, हमारे संजीवनी तैल के लम्बे प्रयोग से श्वेत दाग सुकड़न और गढ़े सब मिट गये। अग्नि से जले हुए के लिये इससे अच्छी औषध और कोई नहीं है।

गलगण्ड

गलगण्ड, बेल, कण्ठमाला की चिकित्सा

यह रोग भी बहुत भयंकर है प्राय: इसके रोगी ठीक चिकित्सा न होने से मर ही जाते हैं। हम इसकी चिकित्सा इस प्रकार करते हैं। शोरे का तेजाब ले आते हैं, उस तेजाब में रूई की फुरहरी भरकर कण्ठमाला की गांठ पर लगाते हैं, उससे वह गांठ जलती है उसमें जलन और पीड़ा होती है, उसके पीछे यह संजीवनी तैल लगा देना चाहिए, इस तरह दिन में तीन-चार बार सावधानी से करें, कुछ दिन में कण्ठमाला की गांठ बैठ जायेगी या जख्म होकर पक जावेगी और अच्छी हो जावेगी। जख्म पर संजीवनी तैल दिन में कई बार लगायें। फिर वह गांठ पुन: नहीं होगी। जितनी भी गांठें कण्ठमाला वा बेल की हों, सब पर इसी प्रकार चिकित्सा करें। यदि इसके साथ कचनार

गूगल और शिरीषारिष्ट का सेवन करायें तो यह भयंकर रोग इससे समाप्त हो जायेगा। यह अनुभूत है। इसी प्रकार अपची और रिसौली की चिकित्सा भी संजीवनी बूटी और इससे बने हुए तैल से होती है। शरीर पर फोड़े फुन्सी हो जाते हैं उनकी चिकित्सा भी इस बूटी से बने हुए तैल से होती है, इससे बहुत अच्छी मलहम बनायी जाती है। वह इस प्रकार है।

संजीवनी मलहम

कत्था सफेद ५ तोले, राल सफेद ५ तोले, फिटकरी सफेद सवा तोला, नीलाथोथा सवा तोला और संजीवनी तैल ५ तोला, सब औषधियों को कूट पीसकर बारीक कर कपड़ छान कर लेवें। संजीवनी तैल और संजीवनी बूटी के रस को मिलायें और दस-पन्द्रह मिनट अंगुली से मिलाते रहें। जब यह गाढ़ी हो जाये तो इसमें पहले पीसी हुई औषधि मिला देवें, और दो-चार मिनट आग पर रख देवें, बस मलहम तैयार है। इस मलहम के होते हुए अन्य किसी मलहम की आवश्यकता नहीं है, चाहे किसी प्रकार का जख्म क्यों न हो यह गन्दे मवाद को साफ करके थोड़े दिनों में जख्म को सर्वथा ठीक कर देती है। बहुत अच्छी औषधि है और अनुभूत है।

बिजली का करण्ट लगे रोगी की चिकित्सा

दो बार आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला में दो ब्रह्मचारिणियों को बिजली का तार छूने से भयंकर करण्ट लगा और इसके आघात से दोनों पुत्रियां बेहोश होकर गिर गईं। दोनों के हाथों में जलकर जख्म हो गये और उनके सारे शरीर पर भयंकर आघात लगा। सौभाग्य से मैं दोनों बार गुरुकुल में ही था और हमारा बनाया

हुआ संजीवनी तैल भी था। इसका तुरन्त प्रयोग किया और इससे आश्चर्यजनक लाभ हुआ, ये दोनों पुत्रियां एक प्रकार से मृत्यु के मुंह में चली गई थीं, ईश कृपा से चिकित्सा करने से इनके प्राण बच गये। एक कन्या जिसका नाम चन्द्रावती था, वे प्रसिद्ध हैडमास्टर सोहनलाल (कालरी ग्राम) की सुपुत्री थी, इसके पिता चौधरी सोहनलाल जी हरयाणा के अध्यापक यूनियन के बहुत वर्ष प्रधान रहे, इनकी पुत्री चन्द्रावती ने भूलकर बिजली के तार पकड़ लिये थे, उससे बेहोश होकर गिर पड़ी और उसके दोनों हाथ बुरी तरह जलकर जख्मी होगये। उसके सारे शरीर पर तो गोघृत की मालिश की गई और जख्मी हाथों पर संजीवनी तैल की पट्टी की गई, इस प्रकार चिकित्सा करने पर वह कुछ दिनों में पूर्ण स्वस्थ होगई। दूसरी पुत्री मनोरमा बोहर ग्राम की है इसको भी बिजली का भयंकर आघात लगा, इसके हाथ भी इसी तरह बेकार हो गये थे और यह बहुत समय तक मूर्च्छित रही, गोघृत की सारे शरीर पर मालिश करने से इसको होश आगया था। किन्तु बोलने में यह सर्वथा असमर्थ थी, इसका मुंह भी नहीं खुलता था, इसके जखमों पर संजीवनी तैल लगवाया गया और मुख में भी संजीवनी तैल डाला, उससे इसको मूर्च्छा भी दूर हुई और कुछ समय के बाद बोलने लगी। कुछ ही दिनों में संजीवनी तैल आदि के द्वारा चिकित्सा करने से ठीक होगई। इसको गोघृत खिलाने और मालिश से भी बहुत लाभ हुआ।

मनोरमा के भाई महादेव शास्त्री की घटना

मैं गुरुकुल आमसेना खरियार रोड जि०कालाहांडी (उड़ीसा) के उत्सव पर गया हुआ था। साथ में रामवीर और ब्रह्मचारी महादेव भी थे। प्रातःकाल गुरुकुल आमसेना में एक कुआ रहट को

देखने हेतु ब्रह्मचारी महादेव गया, अचानक कुयें में गिर गया, उसके गिर जाने से शरीर क्षत-विक्षत होगया। कमर टेढ़ी हो गई, चल फिर नहीं सकता था, रामवीर कन्धे पर महादेव को ले आया। ब्रह्मचारी नन्दकिशोर ने मुझे सूचना दी कि महादेव को बहुत चोट लगी है। मुझे पता चलने पर शीघ्र संजीवनी तैल में आटे का हलुआ बनाकर चिकित्सा की। दूसरे दिन ब्र० महादेव ठीक स्थिति में आगया और स्वस्थ होकर चलने फिरने लगा। इस संजीवनी तैल ने जादू का काम किया।

हमारे गुरुकुल में जब किसी को चोट लगती है तो हम इस तैल का खूब प्रयोग करते हैं। एक विद्यार्थी छत पर से नीचे गिर पड़ा और बेहोश होगया। हमने इसी तैल से मालपूड़े बनाकर उसके सिर पर बांधे, उसे होश आगया और ठीक होगया। इसी प्रकार कन्या गुरुकुल में एक पुत्री छत से नीचे गिर गई, उसको भी इसी तैल से मालपूड़े बनाकर बांधे। एक-दो दिन में ठीक हो गयी। इसी प्रकार सिलानी ग्राम की एक किसान की लड़की को फोड़ा निकला और उसमें नासूर होगया। डाक्टर चिकित्सा करके थक गये और उन्होंने यह कह दिया कि यह पैर तो काटना पड़ेगा। किसान अपनी लड़की को मेरे पास लेकर आया, अत्यन्त निराश और हताश था क्योंकि कन्या १६-१७ वर्ष की अविवाहित थी, पैर काटने पर इससे कोई युवक विवाह क्यों करता। मैंने उसकी चिकित्सा इसी संजीवनी तैल से की और उसे शिरीषारिष्ट पिलाया, कुछ ही दिनों में वह ठीक हो गई। हमारे मिलनेवाले श्री केहरीसिंह आर्य गुरुकुल के बड़े प्रेमी हैं, उनकी अंगुली को चोट लगी व फोड़ा होगया, सड़कर मांस बाहर निकल आया, डाक्टरों ने कहा अंगुली काटनी पड़ेगी, अकस्मात् अंगुली देखी तो मैंने कहा नीम के पानी से धोओ और नीला-थोथा रगड़कर इस गले-सड़े मांस को साफ कर दो। इस पर संजीवनी तैल का फोहा बांधो। उन्होंने मेरी बात मान ली।

संजीवनी तैल से उनकी अंगुली ठीक हो गई और कटने से बच गई। डाक्टर सत्यवीर आयुर्वेदाचार्य कनहेटी निवासी को पैर पर सांप ने काट लिया और वहां पर जख्म होकर नासूर बन गया, मैंने संजीवनी तैल का प्रयोग किया, कुछ ही दिनों में उनका जख्म ठीक हो गया। हमारे ब्रह्मचारी हरिशरण जी सांपों को बहुत पकड़ते थे। एक दिन उन्होंने काले सांप को पकड़ा। उसने हाथ के अंगूठे में काट लिया, उन्होंने चाकू से अपना अंगूठा ही काट लिया, उनका वह जख्म ठीक नहीं हो रहा था, इस संजीवनी तैल के प्रयोग से ठीक किया गया।

हमारी स्नातिका आचार्या सुमित्रा (गंगानगर) के भाई वैद्य कर्मपाल जी वह जब विद्यार्थी थे और आयुर्वेद कालेज में पढ़ रहे थे तो उनको वातरक्त का रोग होगया और उनका पैर सूज जाता था और उसमें जख्म होकर मवाद निकलता था और फिर उसमें से हड्डी निकलती, उसको बड़ा कष्ट रहता था, हमने इसी संजीवनी तैल से एक मरहम बनायो और खाने के लिए औषध दी। सदा के लिये इस रोग से छुटकारा होगया। इससे पूर्व डाक्टरी चिकित्सा में कई हजार रुपये खर्च कर चुके थे और इस रोग को असाध्य समझ बैठ थे। इस संजीवनी तैल ने वहां भी जादू का काम किया।

दन्त रोग

दांतों के अनेक रोग हैं, जैसे दांतों की जड़ मसूड़ों में से रक्त का निकलना, मसूड़ों का सूजना, पीड़ा होना, दांतों में कीड़ा लग जाना, दांतों का खोखला हो जाना, दांतों में शीतल पानी और गर्म पानी पीने से असह्य पीड़ा होना, इन सभी रोगों में संजीवनी बूटी से तैयार किया हुआ हमारा संजीवनी तैल अत्यन्त लाभप्रद

सिद्ध हुआ है। बार-बार अनेक रोगियों पर इसका प्रयोग किया है। सभी को लाभ हुआ है। दांतों के अनेक डाक्टर हिलते हुए रोगी दांतों को उखाड़ कर फेंक देते हैं। इनको ठीक करने की कोई चिकित्सा नहीं है। एक दिन मेरे पास कराहता हुआ एक रोगी आया जिसके दांतों में असह्य पीड़ा थी, कष्ट के मारे वह कई दिन से सो भी नहीं पाया था। मैंने संजीवनी तैल में कुछ अमृतधारा मिलायी और रूई का फोहा भिगोकर थोड़ा गर्म करके उसके रोगपीड़ित दांतों पर रख दिया। इसने जादू का कार्य किया, पीड़ा दूर होने से रोगी प्रसन्नचित्त होगया, और यह अनुभव करने लगा जैसे पीड़ा थी ही नहीं। इसी प्रकार इसका अनेक रोगियों पर अनुभव किया और सभी को लाभ हुआ।

भोजन करने के पश्चात् अच्छी तरह पानी से कुल्ला करके दांतों को साफ कर दें और दांतों और मसूड़ों पर अच्छी तरह संजीवनी तैल लगाकर थोड़ा मर्दन करें। इस प्रकार करने से दांतों के सभी रोग दूर होते हैं। पायोरिया जैसा भयंकर रोग भी काफूर हो जाता है। यदि दांतों का रोगी किसी अच्छे मंजन में इस संजीवनी तैल को मिलाकर मंजन करे तो दांतों का कोई रोग नहीं होता, और हों तो सब दूर हो जाते हैं।

दांतों का मंजन

त्रिफला और त्रिकुटा, पांचों नोन पतङ्ग।
दांत वज्रसम होत हैं, माजूफल के संग॥

अर्थात् हरड़ बहेड़ा और आंवला इन तीनों का छिलका एक-एक तोला लें। इसी प्रकार काली मिर्च सोंठ बड़ा पीपल भी एक-एक तोला लें और पांचों नमक एक-एक तोला अर्थात् पांच तोले लें। पतंग लकड़ी तीन तोले और माजूफल तीन तोले इन सबको

बारीक पीस लेवें और मिला लेवें, यह अच्छा मंजन हमारा अनुभूत है। यदि इसको और अच्छा बनाना हो तो इसमें तीन तोला भूनी हुई सफेद फिटकरी, दो तोले देशी कपूर और तीन तोला असली अकरकरा भी बारीक पीसकर मिला लेवें। मंजन करते समय इसमें थोड़ा संजीवनी तैल मिला लें।

यह दांतों के सभी रोगों के लिए रामबाण औषध है। अनेक बार यह देखने में आता है जब किसी रोगी के दांत को डाक्टर उखाड़ता है पीड़ा भी होती है और उखड़ने पर उखड़े हुए दांत के स्थान पर से बहुत रक्त निकलता है, डाक्टरों के पास उस रक्त को रोकने के लिये कोई औषध नहीं है। उस समय संजीवनी तैल का भिगोया हुआ फोहा रख दें तो पीड़ा और खून निकलना दोनों बन्द हो जाते हैं। यह जादू जैसा कार्य करता है। अब अनेक दांतों के डाक्टर हमारे इस तैल का खूब प्रयोग करते हैं।

कर्ण रोग

आबाल वृद्ध वनिता सब में ही कानों के रोग देखने में आते हैं। कानों के अन्दर जख्म होने से पीड़ा भी होती है और मवाद पीप निकलता रहता है। इसी से बधिरता (बहरेपन) का रोग हो जाता है, इसके लिए संजीवनी बूटी से बनाया हुआ तैल अचूक औषध है। इस तैल की कुछ बूंदें थोड़ी गर्म करके रोगी के कान में, यदि दोनों कानों का रोगी हो तो दोनों कानों में सोते समय डाल देवें और कान में फोहा लगा देवें। यह तैल गन्दे मवाद को निकालता है और कान के न अच्छे होने वाले जख्म को भी कुछ ही दिनों में ठीक कर देता है। यदि कई वर्षों से एक वा दोनों कानों में जख्म हो, पीड़ा हो या मवाद आता रहता हो तो यह तैल रोगी के कानों में प्रातः और सायं दोनों

समय डालना चाहिए। यदि बहरापन अधिक हो तो इस तैल से जख्मों के अच्छा होने पर बिल्वादि तैल का प्रयोग करना चाहिये। इसकी भी कुछ बूंदें गर्म करके कान में सोते समय डालनी चाहिएं। इस प्रकार इस तैल के प्रयोग करने से सभी कर्णरोग दूर हो जाते हैं। कान में से जो मवाद निकले और कानों में लग जाये, उसको भी इसी संजीवनी तैल से साफ करना चाहिये। कई बार यह देखने में आता है कि कान से निकला हुआ मवाद कान के बाहर के भाग को सूजा देता है और जख्मी कर देता है, इसी तैल के लगाने से वह भी ठीक हो जाता है।

चक्षुः रोग

कई बार अकस्मात् आंख में कोई चोट लग जाती है और असह्य पीड़ा होकर आंख सूज जाती है। यदि सावधानी से चिकित्सा न की जाए तो चक्षुः दृष्टि ही समाप्त हो जाती है। इसके लिये संजीवनी तैल बड़ा उपयोगी है। मेंहदी के हरे ताजे पत्ते लेकर उन्हें धो लें और कूटकर रस निकाल लें। एक रूई का इतना बड़ा फोहा जो सारी आंख को ढक ले, उस रस में भिगो लें और कटोरी में थोड़ा सा संजीवनी तैल डालकर उस फोहे को गर्म कर लेवें और आंख पर बांधकर सो जायें, इससे आंख की सूजन, चोट, लाली, एक दो दिन में ही दूर हो जाती है और चक्षुःदृष्टि सुरक्षित रहती है। एक बार श्री पंडित ओम्प्रकाश सिद्धान्तशिरोमणि जब वे गुरुकुल कांगड़ी में प्राध्यापक थे तो उनकी दोनों आंखें दुःखनी आ गईं और सूज गईं। वे पढ़ने-पढ़ाने में सर्वथा असमर्थ होगये, अनेक वैद्यों और डाक्टरों से चिकित्सा कराई, कोई भी लाभ नहीं हुआ। वे बड़े निराश और दुःखी थे। हर समय काला चश्मा लगाये हुए फिरते थे। मैं कार्यवश हरद्वार गया था उनकी व्यथा को देखकर मैं भी व्यथित हो गया और उन्हें

मेंहदी के रस का प्रयोग जैसा ऊपर लिखा है उस प्रकार कराया, मेरे आगे कठिनता यह थी कि उस समय संजीवनी तैल नहीं था, उसके स्थान पर गाय के घी का प्रयोग किया, उसमें कुछ हल्दी भी डाल दी। तीन दिन में आंखें ठीक होगईं, यदि संजीवनी तैल होता तो और शीघ्र लाभ होता। ऐसे अनेक रोगियों पर मैंने संजीवनी तैल का प्रयोग किया, आंखों के लिए बड़ा लाभप्रद सिद्ध हुआ। संजीवनी बूटी का रस ऐसे समय पर मिल जाये तो सोने पर सुहागे का काम देता है।

नकसीर रोग

कई व्यक्तियों को नाक से खून निकलने का (नकसीर का) रोग होता है। मैंने यह तैल अनेक रोगियों पर प्रयोग किया है। सोते समय उनके नाक में संजीवनी तैल या संजीवनी बूटी का रस डाल दिया जाये तो नकसीर पहले दिन ही बन्द हो जाती है। कई व्यक्ति ऐसे देखे कि जिनको शीतकाल (जाड़े) में भी नकसीर आती है, उनको भी इस तैल के नाक में डालने से तुरन्त लाभ होता है। किसी के शरीर में अन्दर भी जखम हो तो प्रतिदिन १५-१५ बूंद संजीवनी तैल गाय या बकरी के दूध में पिलाने से आन्तरिक घाव भी ठीक हो जाते हैं। तैल की बजाय यदि संजीवनी घृत बनाकर दिया जाये तो अधिक लाभ होता है। संजीवनी बूटी का रस मिश्री में मिलाकर पीने से शरीर के नाकादि किसी भी अंग से खून निकलता हो तो वह बन्द हो जाता है।

अर्श वा बवासीर

संजीवनी बूटी का तैल बवासीर के मस्सों पर लगाने से खूनी बवासीर या वादी दोनों में लाभ होता है, दोनों प्रकार की

बवासीर में संजीवनी बूटी का रस पिलाया जाय और मस्सों पर रस लगाया जाये तो लाभ होता है। हमारा बनाया हुआ संजीवनी तैल यदि मस्सों पर लगाया जाय और एक दो मास निरन्तर लगाते रहें तो बवासीर के मस्से समूल नष्ट हो जाते हैं। बृहत् कासीसादि तैल यदि संजीवनी तैल में मिला दिया जाये और मस्सों पर लगायें तो और अधिक लाभ होता है। वादी की बवासीर में दो प्याज गर्म अर्थात् भूबल में भून लें और उनके छिलके छीलकर उनको रगड़कर बारीक चटनी बना लेवें। उसकी टिकिया बनाकर संजीवनी तैल में भून लें और उन्हीं से मस्सों और गुदा को सेंके। कुछ दिन ऐसा करने से असह्य कष्ट और पीड़ा दूर हो जाती है। प्याज की टिकिया को मस्सों पर बांधकर सो जायें, भंयकर पीड़ा, सूजन तो पहले दिन दूर हो जाते हैं। और निरन्तर इस प्रकार सेकने और प्याज की टिकिया बांधने से बवासीर के मस्से समूल नष्ट हो जाते हैं। संजीवनी बूटी से घृत बनाकर रोगी को बकरी या गाय के दूध में डालकर पिलाने से खूनी बवासीर का खून आना बन्द हो जाता है और बवासीर भी नष्ट हो जाती है।

शरीर के किसी भी अंग से जैसे नाक वा गुदा से रक्त बहता हो, चाहे उसने भयंकर रूप भी धारण कर लिया हो तो संजीवनी बूटी का रस निकालें और दो तोले इसको लेवे और दो तोले ही जल पीपल का रस इसमें मिला लें और दो तोले मिश्री बारीक पीसकर मिला लें, रोगी को खाली पेट पिलायें, दिन और रात में इसी प्रकार तीन बार पिलायें, रक्तपित्त का रोग सर्वथा दूर होता है। बार-बार का अनुभूत है।

स्त्री रोग

स्त्रियों को रक्तप्रदर का रोग होता है, जो उनको सर्वथा निर्बल कर देता है। यदि उनको संजीवनी बूटी वा जलपीपली का रस मिलाकर उशीर आसव पिलाया जाये तो बहुत शीघ्र लाभ होता है। स्त्रियों को योनि में खुजली और पीड़ा होती है संजीवनी तैल का फोहा रखने से बहुत शीघ्र लाभ होता है। स्त्रियों को श्वेतप्रदर रोग से शिर, कमर पैरों यहां तक सारे शरीर में काफी पीड़ा होती है। संजीवनी तैल की मालिश से पीड़ा दूर होती है।

दुर्घटना के समय

अनेक बार देखा है कि दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों के प्राणों की रक्षा करने में संजीवनी तैल बहुत सहायक होता है। नरेला में श्री बनवारीलाल आर्य का हाथ गंडासे में आकर कट गया, मुझे सूचना मिली, मैं संजीवनी तैल लेकर तुरन्त वहां पहुंच गया और कटे हुए हाथ पर खूब अच्छी तरह संजीवनी तैल से पट्टी कर दी, नहीं तो सारे शरीर का रक्त निकल जाता और उनकी मृत्यु तक हो सकती थी। इस प्रकार के अवसरों पर यह तैल दुर्घटनाग्रस्त प्राणियों की रक्षा करता है, हमारे दोनों गुरुकुलों में और उनके आस पास के घरों में प्रायः ऐसी दुर्घटनायें होती रहती हैं उस समय यह तैल जादू के समान कार्य करता है।

कन्या गुरुकुल नरेला में एक कन्या और गुरुकुल झज्जर में अनेक ब्रह्मचारी छत से नीचे गिर गये, उनके सिर और शरीर के अङ्गों पर भयंकर चोटें आयीं। यहां तक कि वे मूर्च्छित हो गये, कइयों के सिर में चोट लगी और अनेक के हाथ पैरों की हड्डियां

भी टूट गयी। यहां तक मेरी भी मोटर साइकल और जीपादि की बारह दुर्घटनाएं हुईं ऐसे अवसरों पर संजीवनी बूटी से बना हुआ तैल खूब काम आया। हमने इस संजीवनी तैल से हलुआ वा पूड़े बनाकर दुर्घटनाग्रस्त अनेक व्यक्तियों को बांधा। दुर्घटनाग्रस्त मूर्च्छित व्यक्तियों की मूर्च्छा दूर होगई और उनकी चोटें भी शीघ्र अच्छी हो गई। ऐसी घटना मैं पहले भी लिख चुका हूं।

एक बार गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक पण्डित सत्यदेव जी भारद्वाज गुरुकुल झज्जर में पधारे और हमारा जो बलिदान भवन बन रहा था उसे देखने के लिए वहां आये। असावधानी से ईंट पर से उनका पैर फिसल गया और वे गिर पड़े, उनके एक हाथ पर अधिक चोट आयी और असह्य पीड़ा होने लगी। हमने उसी समय संजीवनी तैल का हलुवा बनाकर उनके हाथ पर पट्टी बांधी, पीड़ा शान्त होगई। उन्होंने सारे गुरुकुल को घूमकर देखा और सब विभागों के विषय में पूछताछ कर जानकारी प्राप्त की। गुरुकुल में भोजन भी किया और फिर सब कुछ देखकर अपनी मोटरगाड़ी द्वारा दिल्ली चले गये। उन्होंने गुरुकुल झज्जर को एक लाख रुपया दान भी दिया। हमारे इस तैल से प्रभावित होकर हमारे गुरुकुल झज्जर का बना हुआ च्यवनप्राश मंगवाकर उसका ही प्रयोग करते हैं। उनके हाथ की हड्डी इस चोट से टूट गई थी, टूटी हुई हड्डी पर इस तैल ने जादू का असर दिखाया।

इस प्रकार संजीवनी बूटी से बने हुए तैल से हजारों रोगियों को लाभ पहुंचा है। यदि इसके सारे प्रयोग विस्तार से लिखें, तो महाभारत के समान बहुत बड़ा पोथा बन जायेगा।

नपुंसकता

बहुत से युवक अज्ञान और कुसंग के वश हस्तमैथुन, गुदामैथुन आदि अप्राकृतिक मथुन के कारण नपुंसक हो जाते हैं और

लज्जा के कारण अपने उस रोग को छिपाये रखते हैं। समाचार पत्रों में इस रोग की चिकित्सा के मनलुभावने विज्ञापनों को पढ़-कर, दवाइयां मंगाकर खूब धन लुटाते और दुःखी होते हैं और पीछे रोते पछताते हैं। लाभ के स्थान पर निराशा ही मिलती है। हमारे संजीवनी तैल का प्रयोग बहुत से वैद्य, डाक्टर भी करते हैं। हजारों गृहस्थी तो सदैव अपने घर में इस तैल को शीशियां रखते हैं। कटने, चोट लगने, जलने और बैलों को फाली लगने पर इसका प्रयोग करके खूब लाभ उठाते हैं और इसके गुणों का गान मुक्तकण्ठ से करते हैं। इसलिये अखबारों में बिना विज्ञापन दिये ही सर्वत्र इस तैल की प्रसिद्धि हो रही है। हरयाणा, राज-स्थान, गुजरात, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, आन्ध्र और महाराष्ट्र आदि में भी इस तैल का खूब प्रचार हो गया है। अफ्रीका और यूरोप के देशों में भी इसकी लोगों को जानकारी है। हमारे कई वैद्यों और प्रेमियों ने नपुंसकता दूर करने के लिये अनेक रोगियों पर इसका प्रयोग किया और तिलायें और तैल जिनका प्रयोग नपुंस-कता को दूर करने के लिये किया जाता है यह प्रायः पशुओं की चर्बी और सांखियादि विषों से तैयार किये जाते हैं। इसलिये उनके तैयार करने में हिंसा भी होती है और वे इतने तीक्ष्ण होते हैं कि उनके प्रयोग से मूत्रेन्द्रिय पर फोड़े फुन्सी जख्म और सूजन भी हो जाती है। इनसे लाभ तो होता है परन्तु कष्ट भी बहुत होता है। संजीवनी तैल के लगाने से कोई कष्ट नहीं होता और लाभ ही लाभ होता है, रोगी को चाहिये कि इस तैल को थोड़ा गर्म करके मूत्रेन्द्रिय पर मर्दन करे और पान के पत्ते पर तैल लगाकर धागे से मूत्रेन्द्रिय पर बांधे। इस प्रकार १५ दिन वा एक मास तक करने से नपुंसकता दूर होती है और रोगी को कोई कष्ट भी नहीं होता, इसका प्रयोग करनेवालों ने बताया है, यह अनुभूत है। पं० सेवाराम आर्य के पुत्र श्री देवदत्त ने मुरादाबाद

और रुड़की के अनेक मुस्लिम नपुंसक युवक हमारे इसी संजीवनी तैल से ठीक किये हैं।

पेट दर्द

आचार्य श्री ऋषिपाल जी श्री पण्डित शिवकरण संस्कृत महाविद्यालय चरखीदादरी ने इस संजीवनी तैल का प्रयोग अनेक वर्षों से किया है और मेरे निर्देशनुसार कई वर्षों से संजीवनी तैल बनाते हैं। उन्होंने अपने छात्र और छात्राओं को अनेक बार उदर-पीड़ा, पेट दर्द में दिया है, दो-चार बूंद गर्म जल में डालकर दे देते हैं, पेट में कैसा भी दर्द हो तुरन्त शान्त हो जाता है। वैसे पीड़ा व दर्द को शान्त करने का विशेष गुण इस संजीवनी बूटी में में है। हजारों बार आजमा चुके हैं।

कैसी ही भयंकर चोट हो, गहरा जख्म हो, खून की धारा बहती हो, जहां संजीवनी तैल लगाया और यह सब कुछ शान्त हो जाता है। मुझे भी प्रायः चोट लगती रहती है, मैं सभी चोटों पर संजीवनी तैल का प्रयोग करता हूं। यह संजीवनी बूटी प्राचीन दिव्य गुणों से भरपूर रामबाण औषध है। जितना-जितना इसका अधिक प्रयोग करते हैं उतने ही अधिक अपने दिव्य गुणों को प्रकट करती है। इसमें इतने अच्छे-अच्छे दिव्य गुण हैं जिनको वाणी कह नहीं सकती और लेखनी लिख नहीं सकती। इसके विषय में जितना शोध कार्य किया जाये, उतने ही इसके गुणों के ज्ञान की वृद्धि होगी और हम संसार का अधिक भला कर सकेंगे।

भाई बंसीलाल जी का कांच पर प्रयोग

भाई बन्सीलाल जी जब भी मिलते संजीवनी बूटी की चर्चा किया करते थे और यह दृढ़तापूर्वक कहा करते थे कि यदि कोई

व्यक्ति सफेद कांच को भूल से खा गया हो या किसी ने खिला दिया हो तो उसको इस संजीवनी बूटी का रस प्रचुर मात्रा में पिला दिया जाये। उसका विषाक्त प्रभाव रस पीने से नष्ट हो जायेगा और कोई हानि नहीं करेगा। यह अनुभव तो हमने अनेक बार किया है। शीशे वा कांच के लगने से कोई जख्म हो जाये तो संजीवनी तेल वा संजीवनी का रस उसे शीघ्रातिशीघ्र अच्छा कर देता है। कांच वा कोई कांटा आदि शरीर के अन्दर रह जाये यह अपने विशल्यकरणी नाम के अनुसार उसको बाहर निकाल देता है, रामायण में इसके चार नाम आते हैं वे चारों गुण इसमें हैं। मृतप्राय प्राणी को जीवन दान देनेवाली यह मृतसंजीवनी है। टूटी हुई हड्डी को जोड़नेवाली सन्धानी है। सब प्रकार के जख्मों को भरकर वैसा ही सुवर्ण करनेवाली सावर्ण्यकरणी है। यह रामायण की प्रसिद्ध बूटी संजीवना विशल्यकर्णी सन्धानी और सावर्ण्यकरणी यह बूटी एक भी हो सकती है, पृथक्-पृथक् चार भी हो सकती हैं।

मैं अपने अनुभव के आधार पर कह कसता हूं जिस बूटी की हमने खोज की है, यही बूटी चाहे यह संजीवनी हो विशल्यकर्णी हो उपरोक्त चारों गुण हो इसमें पाये जाते हैं।

संजीवनी तैल बनाने की विधि

तिल व सरसों का विशुद्ध तैल एक किलो लें और उसे कलईदार ताम्बे वा पीतल के बर्तन में डाल दें और मन्द-मन्द अग्नि पर पकायें। जब वह उबलने लगे तो इसमें एक तोला बारीक पीसा हुआ नीलाथोथा, एक तोला पीसी हुई हल्दी और एक तोला पीसा हुआ सैंधा नमक चुटकियों से थोड़ा-थोड़ा डालते रहें, १५-२० मिनट के पीछे इसे नीचे उतारकर ठण्डा कर लेवें, ठण्डा होने पर

इसमें मालकंगनी एक छटांक बारीक पीसकर डाल देवें और दो किलो पानी डालकर खूब उबालें। जब पानी जल जाये तो तैल से चार गुणा ताजा संजीवनी बूटी का रस निकालकर छान लें और इसमें डालकर मन्दाग्नि से पकायें, जब रस जल जाये तो नीचे उतारकर तैल को तुरन्त निकाल लें। ठण्डा होने पर इसे छानकर बोतल में भर देवें, यदि इसको और अच्छा बनाना हो तो दो तोले कपूर देशी बारीक पीसकर गर्म तेल में ही डाल दें, कपूर उसमें मिल जायेगा, उसे बोतल में बन्द कर दें और मजबूत कार्क लगा देवें, यही संजीवनी तैल है।

इसको और अधिक गुणकारी बनाना हो तो मेंहदी, सम्भालु, भृंगराज, नीम, एरण्ड, अश्वगन्ध के पत्तों का रस निकालकर इस तैल में डालते जाये और मन्दाग्नि से पकायें, जब रस जल जाये और तैल को पकने की सुगन्ध आने लगे तो उतारकर छान लेवें और पूर्वोक्त लिखे के अनुसार देशी कपूर इसमें डाल दें, ठण्डा होने पर निथार छानकर बोतलों में भर देवें और मजबूत कार्क लगायें। यही बढ़िया संजीवनी तैल है।

इसी प्रकार संजीवनी घृत तैयार होता है तैल की जगह गोघृत डालें। किन्तु उसमें नीलाथोथा न डालें, शेष विधि जो तैल में लिखी है वही है। संजीवनी बूटी तथा अन्य बूटियों का रस गोघृत में डालें मन्दाग्नि पर पकाकर घृत को सिद्ध करें। यह घृत आन्तरिक पीड़ा, जख्म, बवासीर, नक्सीर आदि में गोदुग्ध में मिलाकर पिलाना चाहिये।

२५ दिसम्बर १९९२ को हमारे गुरुकुल झज्जर के २६ विद्यार्थी और अध्यापक गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) की रजत जयन्ती महोत्सव में गये थे। वहां से वे उड़ीसा के अन्य दर्शनीय स्थल देखने निकल गये। ६-१-१९९३ को लौटते हुये

बिहार के पलामू जिले के कुडु और चन्दवा के मध्य हमारी गाड़ी से एक पत्थर ढोने वाला सामने से आता हुआ ट्रक रगड़ता हुआ निकल गया। उसकी रगड़ की चोट से तीन ब्रह्मचारियों के सिर फूट गये और वे तुरन्त वहीं मारे गये। ब्र० सत्यपाल (२१) सीसवाला (भिवानी) शास्त्री तृतीय वर्ष, ब्र० महावीर (२०) चिमनावास (रेवाड़ी) शास्त्री द्वितीय वर्ष और ब्र० सत्यवीर (१८) मातनहेल रोहतक, शास्त्री प्रथम वर्ष। ब्र० अशोक (माजरा दूबलधन) के सिर में भयंकर चोट लगी। वह तुरन्त मूर्च्छित होगया और मुंह से झाग निकलने लगे तथा हाथ पैर ऐंठने लग गये। ऐसी अवस्था में सभी किंकर्त्तव्यविमूढ़ से होगये। तीन छात्र हाथ से जा चुके थे। चौथा जाने की तैयारी कर रहा था। ऐसी विकट परिस्थिति में सौभाग्यवश संजीवनी तैल गाड़ी में साथ था। तैल को तुरन्त ही अशोक के सिर में लगे घाव में भर दिया गया। तैल ने तत्क्षण जादू सा कार्य किया। उसी समय खून बन्द होगया और ब्रह्मचारी को होश आगया। दुर्घटनास्थल से १०कि० मी० दूर जब डाक्टर के पास गये तो डाक्टरों को भी महान् आश्चर्य हुआ कि ऐसा कौन सा तैल है जिससे इतने गहरे घाव का खून तुरन्त ही बहना बन्द होगया। डाक्टरों ने १३ टांके लगाकर सिर का घाव सील दिया और इस संजीवनी तैल के प्रयोग से ब्रह्मचारी अशोक को नवजीवन प्राप्त होगया। दुर्घटनास्थल पर यह चमत्कार सैकड़ों यात्रियों तथा स्थानीय लोगों ने देखा था।

यह प्राचीन दिव्य बूटी विशल्यकरणी वा संजीवनी के विषय में अपने अनुभव के आधार पर संक्षेप से लिख दिया है। आशा है पाठक इससे यथोचित लाभ उठायेंगे।

—०—

स्वामी ओमानन्द सरस्वती की रचनायें

१. हरयाणा के प्राचीन मुद्रांक	६००)
२. हरयाणा के प्राचीन लक्षणस्थान	३००
३. वीरभूमि हरयाणा	६)
४. शेरशाह सूरी	२)
वीर हेमू	२)
मांस मनुष्य का भोजन नहीं	३)
७. ब्रह्मचर्यामृत	१)
८. बालविवाह से हानियां	१)
९. स्वप्नदोष चिकित्सा	२)
१०. बिच्छूविष चिकित्सा	१)
११. सर्पविष चिकित्सा	५)
१२. पापों की जड़ (शराब)	३)
१३. हमारा शत्रु (तम्बाकू)	३)
१४. नेत्र रक्षा	१)
१५. व्यायाम का महत्त्व	१)
१६. रामराज्य कैसे हो	१)
१७. हरयाणा के वीर यौधेय	१५
१८. ब्रह्मचर्य के साधन १से ११ भाग	२५)
१९. श्लीपद चिकित्सा	१)
२०. हरयाणा की संस्कृति	२)
२१. हरयाणा का संक्षिप्त इतिहास	२)
२२. रूस में १५ दिन	२)
२३. मेरी विदेश यात्रा	२)
२४. जापान यात्रा	३)
२५. कालापानी यात्रा	१)
२६. नैरोबी यात्रा	३)
२७. शराब से सर्वनाश	४)
२८. घरेलू औषधि हल्दी	२)
२९. घरेलू औषधि लवण	२)
३०. भारतीय जड़ी बूटी आक	३)
३१. ,, ,, नीम	३)
३२. ,, ,; पीपल	३.)
३३. ,, ,, बड़	३)
३४. ;; ,, सिरस	३)
३५. गोदुग्ध अमृत है	१०)
३६. शाक भाजी चिकित्सा	५)
३७. आर्यसमाज के बलिदान	२०)

अप्रकाशित ग्रन्थ

३८. महारानी सीता
३९. योरोप यात्रा
४०. भारत के प्राचीन शस्त्रास्त्र

प्रकाशक :
हरयाणा साहित्य संस्थान
गुरुकुल झज्जर, रोहतक